रिसाला नम्बर : 86

Karamate Faruqe Aa'zam (Hindi)

करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म

येह रिसाला **(करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म[1] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (48 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जज़्बए अ़क़ीदत व मह़ब्बत को फ़ुज़ूं तर होता मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

वज़ीरे रिसालत मआब, आस्माने सह़ाबिय्यत के दरख़्शां माहताब, निज़ामे अ़द्ल के आफ़्ताबे आ़लम-ताब, **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं :

اِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوْفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتّٰى تُصَلِّيَ عَلٰى نَبِيِّكَ (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) या'नी बेशक दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो ।

(ترمذی ج۲ ص۲۸ حدیث٤٨٦)

مدینہ

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (17-12-09/29 **ज़ुल हिज्जतिल ह़राम** 1430 सि.हि.) में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

हज़रते अल्लामा किफ़ायत अली काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشَّافِى फ़रमाते हैं :

दुआ के साथ न होवे अगर दुरूद शरीफ़ न होवे हश्र तलक भी बर आ-वरे[1] हाजात

क़बूलिय्यत है दुआ को दुरूद के बाइस येह है दुरूद कि साबित करामतो ब-रकात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदाए फ़ारूक़ी और मुसल्मानों की फ़त्ह याबी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 346 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**करामाते सह़ाबा**" सफ़्ह़ा 74 पर शैखुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं जिस का खुलासा कुछ यूं है : **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ामिये दीने मतीन, मुह़िब्बुल मुस्लिमीन, ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन, इमामुल आ़दिलीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक लश्कर का सिपह सालार (कमान्डर) बना कर सर ज़मीने "**नहावन्द**" में जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया । सिपह सालारे लश्करे इस्लामिया ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कुफ़्फ़ारे ना हन्जार से **बर सरे पैकार** थे कि वज़ीरे रसूले अन्वर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मस्जिदे न-बविय्यिशशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मिम्बरे अत़्हर पर खुत़्बा पढ़ते हुए अचानक इर्शाद फ़रमाया : "**يَا سَارِيَةُ الْجَبَل** या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ पीठ कर लो ।" ह़ाज़िरीने मस्जिद ह़ैरान रह गए कि लश्करे इस्लाम के सिपह सालार ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तो **मदीनए मुनव्वरह**

1 : बर आवर का मा'ना है : पूरा होना ।

زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से सेंकड़ों मील दूर सर ज़मीने **''नहावन्द''** में मसरूफ़े जिहाद हैं, आज **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन्हें क्यूंकर और कैसे पुकारा ? इस उलझन की तशफ़्फ़ी तब हुई जब वहां से फ़ातेहे **नहावन्द** हज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ासिद (या'नी नुमायन्दा) आया और उस ने ख़बर दी कि मैदाने जंग में कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार से मुक़ाबले के दौरान जब हमें शिकस्त के आसार नज़र आने लगे, इतने में आवाज़ आई : **''يَا سَارِيَةُ الْجَبَل** या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ पीठ कर लो ।'' हज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : येह तो **अमीरुल मुअमिनीन**, ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आवाज़ है और फिर फ़ौरन ही अपने लश्कर को पहाड़ की त़रफ़ पुश्त (या'नी पीठ) कर के सफ़ बन्दी का हुक्म दे दिया, इस के बा'द हम ने कुफ़्फ़ारे बद अत्वार पर ज़ोरदार यलग़ार कर दी तो एक दम जंग का पांसा पलट गया और थोड़ी ही देर में इस्लामी लश्कर ने कुफ़्फ़ारे बिकार की फ़ौजों को रौंद डाला और अ़साकिरे इस्लामिया (या'नी इस्लामी फ़ौजों) के क़ाहिराना हम्लों की ताब न ला कर लश्करे अशरार मैदाने कारज़ार से राहे फ़िरार इख़्तियार कर गया और **अफ़्वाजे इस्लाम ने फ़त्हे मुबीन का परचम लहरा दिया ।**[1]

मुराद आई मुरादें मिलने की प्यारी घड़ी आई
मिला ह़ाजत रवा हम को दरे सुल्त़ाने आ़लम सा

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

[1] دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَيْهَقِی ج٦ ص ٣٧٠، تاريخ دمشق لابن عساكر ج٤٤ ص٣٣٦، تَارِيخُ الْخُلَفَاء ص٩٩، مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج٤ ص٤٠١ حديث٥٩٥٤، حجة الله على العالمين ص ٦١٢

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन, फ़ातेहे आ'ज़म हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस आलीशान करामत से इल्मो हिक्मत के कई **म-दनी फूल** चुनने को मिलते हैं : ﴾1﴿ **अमीरुल मुअमिनीन**, मुहिब्बुल मुस्लिमीन, नासिरे दीने मुबीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **मदीनए तय्यिबा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से सेंकड़ों मील की दूरी पर **''नहावन्द''** के मैदाने जंग और उस के अहवाल व कैफ़िय्यात को देख लिया और फिर असाकिरे इस्लामिया की **मुश्किलात का हल भी फ़ौरन लश्कर के सिपह सालार को बता दिया ।** इस से मा'लूम हुवा कि **अहलुल्लाह** की कुव्वते समाअत व बसारत (या'नी सुनने और देखने की ताक़त) को आम लोगों की कुव्वते समाअत व बसारत पर हरगिज़ हरगिज़ क़ियास नहीं करना चाहिये बल्कि येह ए'तिक़ाद रखना चाहिये कि **अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने **महबूब बन्दों के कानों और आंखों में आम इन्सानों से बहुत ही ज़ियादा ताक़त रखी है** और उन की आंखों, कानों और दूसरे आ'ज़ा की ताक़त इस क़दर बे मिस्लो बे मिसाल है और उन से ऐसे ऐसे कारहाए नुमायां अन्जाम पाते हैं कि जिन को देख कर **करामत** के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता ﴾2﴿ वज़ीरे शहन्शाहे नुबुव्वत, रुक्ने क़स्रे मिल्लत हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सेंकड़ों मील दूर नहावन्द के मक़ाम पर पहुंची और वहां सब अहले लश्कर ने उस को सुना ﴾3﴿ जा नशीने रसूले मक़्बूल, गुलशने सहाबिय्यत के महकते फूल, **अमीरुल मुअमिनीन**, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ख़त्ताब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ब-र-कत से **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ ने इस जंग में मुसल्मानों को फ़त्ह़ो नुसरत इनायत फ़रमाई। (करामाते सह़ाबा, स. 74 ता 76, مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج١٠ ص٢٩٦ تحت الحديث ٥٩٥٤ مُلَخَّصاً) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلّم

किस ने ज़र्रों को उठाया और सह़रा कर दिया — किस ने क़त़रों को मिलाया और दरिया कर दिया

किस की ह़िक्मत ने यतीमों को किया दुर्रे यतीम — और ग़ुलामों को ज़माने भर का मौला कर दिया

शौकते मग़रूर का किस शख़्स ने तोड़ा त़िलिस्म(1) — मुन्हदिम(2) किस ने इलाही ! क़स्रे किसरा (3) कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म का तआ़रुफ़

ख़लीफ़ए दुवुम, जा नशीने पैग़म्बर, वज़ीरे नबिय्ये अत़्हर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की कुन्यत "अबू ह़फ़्स" और लक़ब "फ़ारूके़ आ'ज़म" है। एक रिवायत में है आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ 39 मर्दों के बा'द **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ए'लाने नुबुव्वत के छटे साल में ईमान लाए। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के इस्लाम क़बूल करने से मुसल्मानों को बेह़द ख़ुशी हुई और उन को बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों के साथ मिल कर **ह़-रमे मोह़तरम में ए'लानिया नमाज़ अदा फ़रमाई।** आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ कुफ़्फ़ारे ना हन्जार से बर सरे

(1) जादू (2) गिराना (3) बादशाहे ईरान का मह़ल।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

पैकार रहे और सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तमाम इस्लामी तह़रीकात और सुल्ह़ व जंग वग़ैरा की तमाम मन्सूबा बन्दियों में वज़ीर व मुशीर की ह़ैसिय्यत से **वफ़ादार व रफ़ीक़े कार रहे ।** **मोह़सिने उम्मत**, ख़लीफ़ए अव्वल, **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह कर जा नशीनिये मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **तमाम तर ज़िम्मे दारियों को ब तरीक़े अह़्सन सर अन्जाम दिया ।**

नमाज़े **फ़ज्र** में एक बद बख़्त अबू लुअ-लुअ फ़ीरोज़ नामी (मजूसी या'नी आग पूजने वाले) काफ़िर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ख़न्जर से वार किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ख़्मों की ताब न लाते हुए तीसरे दिन श-रफ़े शहादत से मुशर्रफ़ हो गए । ब वक़्ते शहादत उ़म्र शरीफ़ **63** बरस थी । ह़ज़रते सय्यिदुना **सुहैब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और गौहरे नायाब, फ़ैज़ाने नुबुव्वत से फ़ैज़याब, ख़लीफ़ए रिसालत मआब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रौज़ए मुबा-रका के अन्दर यकुम **मुह़र्रमुल ह़राम** 24 हिजरी इतवार के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलूए अन्वर में मदफ़ून हुए जो कि सरकारे अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलूए पाक में आराम फ़रमा हैं । **(الرّیاض النضرة فی مناقِب العَشرة ج ۱ ص ۲۸۵، ۴۰۸، ۴۱۸، تارِیخُ الْخُلَفاء ص۱۰۸ وغیرہ)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

कुर्बे ख़ास

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को **दुन्यवी ह़यात में भी और बा'दे ममात भी** सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **कुर्बे ख़ास** अ़त़ा किया गया चुनान्चे आ़शिक़े मुस्त़फ़ा, फ़िदाए जुम्ला सह़ाबा, मुह़िब्बे औलिया व अस्फ़िया शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

मह़बूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ कुब्बे में पहलू में जल्वा गाह अ़तीक़ो उ़मर की है
सा'दैन का क़िरान है पहलूए माह में झुरमट किये हैं तारे तजल्ली क़मर की है(1)

किसी और मह़ब्बत वाले ने कहा है :

ह़याती में तो थे ही ख़िदमते मह़बूबे ख़ालिक़ में
मज़ार अब है क़रीबे मुस्त़फ़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

साह़िबे करामात

बारगाहे नुबुव्वत से फ़ैज़याब, आस्माने रिफ़अ़त के दरख़्शां माहताब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बा'द तमाम सह़ाबए

(1) सा'दैन दो सईद सय्यारों के नाम हैं। यहां सा'दैन से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और माह व क़मर या'नी चांद रसूले ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और **तारे 70** ह़ज़ार मलाएका हैं जो मज़ारे पुर अन्वार पर छाए हुए हैं।

किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अफ़्ज़ल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **साहिबुल करामात** और **जामिउ़ल फ़ज़ाइल वल कमालात** हैं। रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दीगर ख़ुसूसिय्यात के साथ साथ बहुत सी करामात का ताजे फ़ज़ीलत दे कर दूसरों से मुमताज़ फ़रमा दिया।

करामत ह़क़ है

ज़मानए नुबुव्वत से आज तक कभी भी इस मस्अले में अहले ह़क़ के दरमियान इख़्तिलाफ़ नहीं हुवा सभी का मुत्तफ़िक़ा अ़क़ीदा है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की करामतें ह़क़ हैं और हर ज़माने में **अल्लाह** वालों की करामात का सुदूर व ज़ुहूर होता रहा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक कभी भी इस का सिल्सिला मुन्क़तेअ़ (या'नी ख़त्म) नहीं होगा, बल्कि हमेशा **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰه से करामात सादिर व ज़ाहिर होती रहेंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करामत की ता'रीफ़

अब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मम्बए इ़ल्मो हुनर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मज़ीद चन्द करामात बयान की जाएंगी मगर पहले "**करामत**" की ता'रीफ़ सुन लीजिये। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 58 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद

अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "करामत" की ता'रीफ़ कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं : **"वली से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को "करामत" कहते हैं।"** (बहारे शरीअ़त)

अफ़्ज़लुल औलिया

उ़-लमा व अकाबिरीने इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن **"अफ़्ज़लुल औलिया"** हैं, क़ियामत तक के तमाम **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰه अगर्चे द-र-जए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ वोह किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे रिसालत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों को विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम इ़नायत फ़रमाया और इन मुक़द्दस हस्तियों رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों या'नी बुज़ुर्गियों से सरफ़राज़ किया कि दूसरे तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इस में शक नहीं कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इस क़दर ज़ियादा करामतों का तज़्किरा नहीं मिलता जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से करामतें मन्क़ूल हैं। येह वाज़ेह़ रहे कि कस्रते करामत, अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूं कि **विलायत दर ह़क़ीक़त क़ुर्बे बारगाहे अ-ह़दिय्यत** عَزَّوَجَلَّ **का नाम है** और येह क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ जिस को जिस क़दर

ज़ियादा ह़ासिल होगा उसी क़दर उस का द-र-जए विलायत बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن चूंकि निगाहे नुबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मुस्तफ़ीज़ हुए, इस लिये बारगाहे रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ में इन बुज़ुर्गों को जो **क़ुर्ब** व **तक़र्रुब** ह़ासिल है वोह दूसरे **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰه को ह़ासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से बहुत कम करामतें मन्क़ूल हुईं लेकिन फिर भी उन का द-र-जए विलायत दीगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से ह़द द-रजा अफ़्ज़लो आ'ला और बुलन्दो बाला है।

सरकारे दो आ़लम से मुलाक़ात का आ़लम — आ़लम में है मे'राजे कमालात का आ़लम
येह राज़ी ख़ुदा से हैं ख़ुदा इन से है राज़ी — क्या कहिये सह़ाबा की करामात का आ़लम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दरियाए नील के नाम ख़त़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **192** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सवानेह़े करबला''** सफ़ह़ा **56** ता **57** पर **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तह़रीर फ़रमाते हैं : जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है : जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा तो एक रोज़ **अहले मिस्र** ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अ़र्ज़ की : ऐ अमीर ! हमारे **दरियाए नील** की एक रस्म है जब तक उस को अदा न किया जाए दरिया जारी नहीं रहता। उन्हों ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या ?

कहा : हम एक कंवारी लड़की को उस के वालिदैन से ले कर उ़म्दा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर से सजा कर **दरियाए नील** में डालते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : **इस्लाम** में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहियात रस्मों को मिटाता है। पस वोह रस्म मौक़ूफ़ रखी (या'नी रोक दी) गई और दरिया की रवानी कम होती गई यहां तक कि लोगों ने वहां से चले जाने का क़स्द (या'नी इरादा) किया, येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने **अमीरुल मुअमिनीन** ख़लीफ़ए सानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में तमाम वाक़िआ़ लिख भेजा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : तुम ने ठीक किया बेशक **इस्लाम** ऐसी रस्मों को मिटाता है। मेरे इस ख़त़ में एक रुक़्आ़ है इस को **दरियाए नील** में डाल देना। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास जब **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ख़त़ पहुंचा और उन्हों ने वोह रुक़्आ़ उस ख़त़ में से निकाला तो उस में लिखा था : ''(ऐ दरियाए नील !) अगर तू ख़ुद जारी है तो न जारी हो और **अल्लाह तआ़ला** ने जारी फ़रमाया तो मैं **वाह़िदो क़ह्हार** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि तुझे जारी फ़रमा दे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने येह रुक़्आ़ **दरियाए नील** में डाला एक रात में सोलह[16] गज़ पानी बढ़ गया और येह रस्म मिस्र से बिल्कुल मौक़ूफ़ (या'नी ख़त्म) हो गई। **(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی ص۳۱۸ رقم ۹٤۰)**

चाहें तो इशारों से अपने, काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की, सरदार का आ़लम क्या होगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की हुक्मरानी का परचम दरियाओं के पानियों पर भी लहरा रहा था और दरियाओं की रवानी भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ना फ़रमानी नहीं करती थी । निगाहे नुबुव्वत से फ़ैज़ो ब-र-कत याफ़्ता, बारगाहे रिसालत से ता'लीमो तरबिय्यत याफ़्ता ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हुस्ने ईमान की ब-रकात थीं, रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने **अहले मिस्र** को इस बुरी रस्म से नजात अ़ता फ़रमाई ।

हम ने तक़्सीर की आ़दत कर ली आप अपने पे क़ियामत कर ली
मैं चला ही था मुझे रोक लिया मेरे अल्लाह ने रह़मत कर ली

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ना जाइज़ रस्मो रवाज और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ अहले मिस्र में दरियाए नील को जारी रखने के लिये रस्मे बद जारी थी इसी त़रह़ दौरे ह़ाज़िर में भी बा'ज़ क़बीह़ और ना जाइज़ रुसूमात ज़ोर पकड़ती जा रही हैं और येह ख़िलाफ़े शर-अ़ रुसूमात मुसल्मानों को पस्ती व बरबादी के अ़मीक़ गढ़े की त़रफ़ धकेलती और सुन्नते **रसूलुल्लाह** से दूर करती चली जा रही हैं । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 170 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल एक ज़बर दस्त किताब **''इस्लामी ज़िन्दगी''** सफ़ह़ा 12 ता 16 पर **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने बुरी रुसूमात और मुसल्मानों

के बिगड़े हुए ह़ालात की जो कुछ कैफ़िय्यात बयान फ़रमाई हैं उन का ख़ुलासा कुछ यूं है **:** आज कौन सा दर्द रखने वाला दिल है जो मुसल्मानों की मौजूदा पस्ती और इन की मौजूदा ज़िल्लतो ख़्वारी और नादारी पर न दुखता हो और कौन सी आंख है जो इन की ग़ुरबत, मुफ़्लिसी, बे रोज़गारी पर आंसू न बहाती हो ! ह़ुकूमत इन से छिनी, दौलत से येह महरूम हुए, इ़ज़्ज़तो वक़ार इन का ख़त्म हो चुका, ज़माने भर की मुसीबत का शिकार मुसल्मान बन रहे हैं, इन ह़ालात को देख कर कलेजा मुंह को आता है, मगर दोस्तो ! फ़क़त़ रोने धोने से काम नहीं चलता बल्कि ज़रूरी येह है कि इस के इ़लाज पर ग़ौर किया जाए। इ़लाज के लिये चन्द चीज़ें सोचनी चाहिएं (1) अस्ल बीमारी क्या है ? (2) इस की वजह क्या है ? मरज़ क्यूं पैदा हुवा ? (3) इस का इ़लाज क्या है ? (4) इस इ़लाज में परहेज़ क्या क्या है ? अगर इन चार[4] बातों में ग़ौर कर लो तो समझ लो कि इ़लाज आसान है। **कई** लीडराने क़ौम और पेशवायाने मुल्क ने अक़्वामे मुस्लिम के इ़लाज का बीड़ा उठाया मगर नाकामी ही मिली और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जिस किसी नेक बन्दे ने मुसल्मानों को उन का **सह़ीह़ इ़लाज बताया** तो बा'ज़ नादान मुसल्मानों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया, उस पर फब्तियां कसीं, ज़बाने त़ा'न दराज़ की, ग़-रज़े कि सह़ीह़ त़बीबों की आवाज़ पर कान न धरा।

मुसल्मानों की बादशाहत गई, इ़ज़्ज़त गई, दौलत गई, वक़ार गया, सिर्फ़ एक वजह से वोह येह कि हम ने शरीअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी छोड़ दी, **हमारी ज़िन्दगी इस्लामी ज़िन्दगी न रही।** इन तमाम नुहूसतों की वजह येह है कि हमें **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्म और आख़िरत का डर न रहा। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

दिन लह्व[1] में खोना तुझे शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी, ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

मस्जिदें हमारी वीरान, मुसल्मानों से **सिनेमा** व तमाशे आबाद, हर क़िस्म के उ़यूब मुसल्मानों में मौजूद, ना जाइज़ रस्में हम में क़ाइम हैं, हम किस त़रह़ इ़ज़्ज़त पा सकते हैं ! जैसे किसी ने कहा है :

वाए नाकामी ! मताए़ कारवां जाता रहा
कारवां के दिल से एह़सासे ज़ियां जाता रहा

3 बीमारियां

मुसल्मानों की अस्ल बीमारी तो अह़कामे ख़ुदा व सुन्नते मुस्त़फ़ा को छोड़ना है, अब इस मरज़ की वजह से और बहुत सी बीमारियां पैदा हो गईं। मुसल्मानों की बड़ी बड़ी **तीन3 बीमारियां** हैं : **अव्वल** रोज़ाना नए नए मज़्हबों की पैदावार और हर आवाज़ पर मुसल्मानों का आंखें बन्द कर के चल पड़ना। **दूसरे** मुसल्मानों की आपस की ना चाक़ियां, अ़दावतें और मुक़द्दमा बाज़ियां। **तीसरे** जाहिल लोगों की घड़ी हुई **ख़िलाफ़े शर-अ़ या फ़ुज़ूल रस्में,** इन तीन क़िस्म की बीमारियों ने मुसल्मानों को तबाह कर डाला, बरबाद कर दिया, घर से बे घर बना दिया, मक़्रूज़ कर दिया ग़-रज़े कि ज़िल्लत के गढ़े में धकेल दिया।

1: खेलकूद

मज़्कूरा बीमारियों का इलाज

पहली बीमारी का इलाज येह है कि हर बद मज़हब की सोह़बत से बचो, उस **आ़लिमे ह़क़ और सुन्निय्युल मज़हब शख़्स के पास बैठो** जिस की सोह़बते फ़ैज़ असर से सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ और इत्तिबाए़ शरीअ़त का जज़्बा पैदा हो ।

दूसरी बीमारी का इलाज येह है कि अक्सर फ़ितना व फ़साद की जड़ दो चीज़ें हैं : एक **ग़ुस्सा** और अपनी बड़ाई और दूसरे हुक़ूक़े शरइ़य्या से **ग़फ़्लत** । हर शख़्स चाहता है कि मैं सब से ऊंचा रहूं और सब मेरे हुक़ूक़ अदा करें मगर मैं किसी का ह़क़ अदा न करूं अगर हमारी त़बीअ़त में से ग़ुरूर व **तकब्बुर** निकल जाए, आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ पैदा हो जाए, हम में से हर शख़्स दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कभी झगड़े की नौबत ही न आए ।**

तीसरी बीमारी येह है कि हमारे अक्सर मुसल्मानों में बच्चे की पैदाइश से ले कर मरने तक मुख़्तलिफ़ मौक़ओं़ पर ऐसी तबाह कुन रस्में जारी हैं जिन्हों ने **मुसल्मानों की जड़ें खोखली कर दी हैं ।** शादी बियाह की रस्मों की बदौलत हज़ारों मुसल्मानों की जाएदादें, मकानात, दुकानें सूदी क़र्ज़ें में चली गईं और बहुत से आ'ला ख़ानदानों के लोग आज किराए के मकानों में गुज़र कर रहे हैं और ठोकरें खाते फिरते हैं । अपनी क़ौम की इस मुसीबत को देख कर मेरा दिल भर आया, त़बीअ़त में जोश पैदा हुवा कि कुछ ख़िदमत करूं । रोशनाई के चन्द क़त़रे ह़क़ीक़त में मेरे आंसूओं के क़त़रे हैं, ख़ुदा करे कि इस से क़ौम की इस्लाह़ हो जाए, मैं ने येह महसूस किया कि बहुत से लोग इन शादी बियाह और दीगर फ़ुज़ूल

रस्मों से बेज़ार तो हैं मगर बरादरी के ता'नों और अपनी नाक कटने के ख़ौफ़ से जिस त़रह़ हो सकता है क़र्ज़ ले कर इन जाहिलाना रस्मों को पूरा करते हैं। कोई तो ऐसा मर्दे मुजाहिद हो जो बिला ख़ौफ़ो ख़त़र हर एक के ता'ने बरदाश्त कर के तमाम ना जाइज़ व ह़राम रस्मों पर लात मार दे और सुन्नते सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़िन्दा कर के दिखा दे कि जो शख़्स **सुन्नत** को ज़िन्दा करे उस को **100 शहीदों का सवाब** मिलता है। क्यूं कि शहीद तो एक दफ़्आ़ तलवार का ज़ख़्म खा कर दुन्या से पर्दा कर जाता है मगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नेक बन्दा उ़म्र भर लोगों की ज़बानों के ज़ख़्म खाता रहता है। वाज़ेह़ रहे कि मुरव्वजा रस्में दो क़िस्म की हैं **: एक** तो वोह जो शरअ़न ना जाइज़ हैं। **दूसरी** वोह जो तबाह कुन हैं और बहुत दफ़्आ़ उन के पूरा करने के लिये मुसल्मान सूदी क़र्ज़ की नुहूसत में भी मुब्तला हो जाता है। ह़ालां कि सूद का लैन दैन गुनाहे कबीरा है और यूं येह **रुसूमात बहुत सारी आफ़ात में फंसा देती हैं,** इन से दूरी ही में आ़फ़िय्यत है। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 12 ता 16 ब तसर्रुफ़)

(ग़लत़ व क़बीह़ रुसूमात के नुक़्सानात जानने और इन के इ़लाज की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये "मक-त-बतुल मदीना" की किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

शादियों में मत गुनाह नादान कर   ख़ाना बरबादी का मत सामान कर
छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रवाज   सुन्नतों पर चलने का कर अ़ह्द आज
ख़ूब कर ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा   दिल मदीना उन की यादों से बना

(वसाइले बख़्शिश, स. 670)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

क़ब्र वाले से गुफ़्त-गू

मुद्दआए रसूल, रफ़ीक़े रसूल, मुशीरे रसूल, जां निसारे रसूल, **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार एक सालेह़ (या'नी नेक परहेज़ गार) नौ जवान की **क़ब्र** पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾ (پ۲۷، الرحمٰن:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हु़ज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये **दो जन्नतें** हैं।

ऐ नौ जवान ! बता ! तेरा **क़ब्र** में क्या ह़ाल है ? उस सालेह़ (या'नी बा अ़मल) नौ जवान ने **क़ब्र** के अन्दर से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम ले कर पुकारा और ब आवाज़े बुलन्द दो[2] मर्तबा जवाब दिया : قَدْ اَعْطَانِيْهِمَا رَبِّیْ عَزَّ وَجَلَّ فِی الْجَنَّةِ. मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ ने **येह दोनों जन्नतें मुझे अ़त़ा फ़रमा दी हैं।** (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۴۵ ص۴۵۰)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दे बहरे उ़मर अपना डर या इलाही
दे इश्क़े शहे बह़रो बर या इलाही

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क्या शान है फ़ारूक़े आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की, कि ब अ़त़ाए रब्बे अक्बर عَزَّ وَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अहले **क़ब्र** के **अह़्वाल मा'लूम कर लिये।** इस रिवायत से येह भी पता चला कि जो शख़्स नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से लरज़ां व तरसां रहेगा, बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में खड़ा होने से डरेगा, वोह **अल्लाहु रब्बुल उ़ला** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मते कामिला से **दो जन्नतों** का ह़क़दार क़रार पाएगा। जवानी में इ़बादत करने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ रखने वालों को मुबारक हो कि बरोज़े क़ियामत जब सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, सायए अ़र्श के इ़लावा उस जां-गुज़ा (या'नी जान को तक्लीफ़ में डालने वाली) गरमी से बचने का कोई ज़रीआ़ न होगा तो **अल्लाहु रह़मान** عَزَّ وَجَلَّ ऐसे **ख़ुश क़िस्मत मुसल्मान को अपने अ़र्शे पनाह गाहे अहले फ़र्श का सायए रह़मत इनायत फ़रमाएगा** जैसा कि

सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **88** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ?''** सफ़ह़ा **20** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی नक़्ल फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि इन सिफ़ात के ह़ामिल **मुसल्मान अ़र्श के साए में होंगे :** (उन

में से दो येह हैं) (1)..... वोह शख़्स जिस की नश्वो नुमा इस ह़ाल में हुई कि उस की **सोह़बत, जवानी और क़ुव्वत अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ की पसन्द और रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ हुई और (2)..... वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र किया और उस के ख़ौफ़ से उस की आंखों से आंसू बह निकले। **(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبه ج۸ ص۱۷۹ حدیث۱۲)**

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम
दीवाना शहन्शाहे मदीना का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अचानक दो शेर आ पहुंचे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक शख़्स ढूंड रहा था, किसी ने बताया कि कहीं आबादी के बाहर सो रहे होंगे। वोह शख़्स आबादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इस ह़ालत में पाया कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सर के नीचे दुर्रा रखे हुए ज़मीन पर सो रहे थे, उस ने नियाम से तलवार निकाली और वार करना ही चाहता था कि ग़ैब से **दो[2] शेर** नुमूदार हुए और उस की त़रफ़ बढ़े, येह मन्ज़र देख कर वोह चीख़ पड़ा, उस की आवाज़ से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेदार हो गए, उस ने अपना सारा वाक़िआ़ बयान किया और आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर मुसल्मान हो गया। **(تفسیرِ کبیر ج۷ ص۴۳۳)**

घर वालों को तहज्जुद के लिये जगाते

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि इन के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रात को उठ कर नमाज़ें अदा फ़रमाते, इस के बा'द जब रात का आख़िरी वक़्त आ जाता तो अपने घर वालों को बेदार कर के फ़रमाते कि नमाज़ पढ़ो। फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत करते :

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾

(پ۱۶، طٰہٰ:۱۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते हम तुझे रोज़ी देंगे और अन्जाम का भला परहेज़ गारी के लिये।

(مؤطّا امام مالك ج۱ ص۱۲۳ حدیث ۲۶۵)

अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल आ़दिलीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नमाज़ियों की ख़बर गीरी करने की एक रिवायत और मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये नीज़ इस के मुत़ाबिक़ अ़मल का ज़ेह्न बनाइये चुनान्चे **अमीरुल मुअमिनीन** फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अबी **ह़स्मा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नहीं देखा। बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सय्यिदुना **सुलैमान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का घर था उन की मां ह़ज़रते सय्यि-दतुना **शिफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में मैं ने सुलैमान को नहीं पाया ! उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, सय्यिदुना **उ़मर**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं येह मेरे नज़्दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम करूं। (या'नी रात भर नफ़्लें पढ़ूं) **(موطّا امام مالك ج١ص١٣٤حديث٣٠٠)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने घर जा कर ख़बर निकाली, इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शब भर नवाफ़िल पढ़ने या इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त या सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रात गए तक शिर्कत करने के सबब सुब्ह़ की नमाज़ क़ज़ा हो जाना कुजा अगर फ़ज्र की जमाअ़त भी चली जाती हो तो लाज़िम है कि इस त़रह़ के मुस्तह़ब्बात छोड़ कर रात आराम कर ले और बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करे।

मह़बूबे फ़ारूके़ आ'ज़म

फ़रमाने फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ : मुझे वोह शख़्स मह़बूब (या'नी प्यारा) है जो मुझे मेरे ऐ़ब बताए। **(الطبقات الكبرى لابن سعد ج٣ص٢٢٢)**

शह्द का पियाला

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में शह्द का पियाला पेश किया गया, उसे अपने हाथ पर रख कर तीन[3] मर्तबा फ़रमाया : "अगर मैं इसे पी लूं तो इस की ह़लावत (या'नी लज़्ज़त व मिठास) ख़त्म हो जाएगी मगर ह़िसाब बाक़ी रह जाएगा।" फिर आप ने किसी और को दे दिया। **(الزهد لابن المبارك ص٢١٩)**

फ़ानी दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लिया करो

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने इस बात पर ग़ौर किया है कि जब दुन्या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

का इरादा करता हूं तो आख़िरत का नुक़्सान होता नज़र आता है और जब आख़िरत का इरादा करता हूं तो दुन्या को नुक़्सान महसूस होता है चूंकि मुआ़-मला ही इसी त़रह़ का है लिहाज़ा तुम (आख़िरत का नहीं बल्कि) फ़ानी दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लिया करो। (اَلزُّھد للامام احمد ص۱۰۲)

फ़ारूके़ आ'ज़म का रोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मह़बूबे जनाबे सादिक़ो अमीन, सय्यिदुल ख़ाइफ़ीन, **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़त़्ई जन्नती होने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से गिर्या कुनां रहते बल्कि ख़शिय्यते इलाही عَزَّ وَجَلَّ से रोने के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरए पुर अन्वार पर दो सियाह लकीरें पड़ गई थीं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **695** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"अल्लाह वालों की बातें"** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **123** पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पाकीज़ा ज़िन्दगी के एक ह़सीन और लाइके़ तक़्लीद गोशे का ज़िक्र है : ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ईसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि साहि़बे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, नज्मे राहे हिदायत, मम्बए़ इल्मो ह़िक्मत ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरए अक़्दस पर बहुत ज़ियादा **रोने की वजह से दो[2] काली लकीरें पड़ गई थीं।**

(اَلزُّھد للا مام احمد بن حنبل ص۱۴۹)

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

ख़ुद को अ़ज़ाब से डराने का अनोखा त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बसा अवक़ात आग के क़रीब हाथ ले जाते फिर अपने आप से सुवाल फ़रमाते : ऐ ख़त़्त़ाब के बेटे ! क्या तुझ में येह आग बरदाश्त करने की त़ाक़त है ?

(مناقب عمر بن الخطاب لابن الجوزی ص١٥٤)

बकरी का बच्चा भी मर गया तो......

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मैं ने **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखा कि ऊंट पर सुवार हो कर बहुत तेज़ी से जा रहे हैं, मैं ने कहा : **या अमीरल मुअमिनीन !** कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ? जवाब दिया : स-दक़े का एक ऊंट भाग गया है उस की तलाश में जा रहा हूं, अगर दरियाए फ़िरात के कनारे पर बकरी का एक बच्चा भी मर गया तो बरोज़े क़ियामत उ़मर से इस के बारे में पूछगछ होगी। **(ایضاً ص١٥٣)**

जहन्नम को ब कसरत याद करो

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : जहन्नम को कसरत से याद करो क्यूं कि इस की **गरमी निहायत सख़्त** और **गहराई बहुत ज़ियादा** है और इस के **गुर्ज़ या'नी हथोड़े लोहे** के हैं। (जिन से मुजरिमों को मारा जाएगा) **(ترمذی ج ٤ ص ٢٦٠ حیدث ٢٥٨٤)**

लोगों की इजाज़त से बैतुल माल से शह्द लेना

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक बार बीमार हुए, त़बीबों ने इलाज में शह्द तज्वीज़ किया, बैतुल माल में शह्द मौजूद था लेकिन मुसल्मानों की इजाज़त के बिग़ैर लेने पर राज़ी न थे, चुनान्चे इसी ह़ालत में मस्जिद में ह़ाज़िर हुए और मुसल्मानों को जम्अ़ कर के इजाज़त त़लब की, जब लोगों ने इजाज़त दी तो इस्ति'माल फ़रमाया। **(طبقاتِ ابنِ سعد ج۳ ص۲۰۹)**

मुसल्सल रोज़े रखते

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ विसाल से दो[2] साल तक लगातार रोज़े रखते रहे। दूसरी रिवायत में है : ब-क़रह ईद व ईदुल फ़ित्र और सफ़र के इलावा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मुसल्सल रोज़े रखते थे। **(مناقب عمر بن الخطاب لابن الجوزی ص۱۶۰)**

सात या नव लुक़्मे

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ 7 या 9 लुक़्मों से ज़ियादा खाना नहीं खाते थे। **(اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۱۱۱)**

ऊंटों के बदन पर तेल मल रहे थे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक मर्तबा स-दक़े के ऊंटों के बदन पर क़त़रान (या'नी तेल) मल रहे थे, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! येह काम किसी ग़ुलाम से करवा लेते ! जवाब दिया : मुझ से बढ़ कर कौन ग़ुलाम हो सकता है, जो शख़्स मुसल्मानों का वाली है वोह उन का ग़ुलाम है। **(کَنْزُ الْعُمّال ج۵ ص۳۰۳ رقم ۱۴۳۰۳)**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

फ़ारूक़े आ'ज़म का जन्नती मह़ल

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, रसूले रह़मत, मालिके जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अ़-श-रए मुबश्शरह में शामिल** क़त़्ई जन्नती हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि महबूबे रह़मान, नबिय्ये ग़ैबदान, रसूले ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं **जन्नत** में गया, वहां मैं ने एक **मह़ल** देखा, इस्तिफ़्सार किया : (या'नी पूछा) **येह मह़ल किस का है ?** फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते **उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का । मैं ने चाहा कि अन्दर दाख़िल हो कर उसे देखूं लेकिन (ऐ उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ !) तुम्हारी ग़ैरत याद आ गई । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़र्ज़ करने लगे : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान, क्या मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़ैरत कर सकता हूं ? **(بُخاری ج ۲ ص۵۲۰حدیث۳۶۷۹)** **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की — لَا وَرَبِّ الْعَرْش जिस को जो मिला उन से मिला
जान की इक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की — ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला

पहले शे'र का मत़लब है : अ़र्शे आ'ज़म के पैदा करने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस किसी को जो कुछ मिला है ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाक दर से मिला है, क्यूं कि दोनों जहानों में रसूले करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ही का स-दक़ा तक़्सीम हो रहा है ।

दूसरे शे'र के मा'ना हैं : इ़श्क़े रसूल की आग में जल कर ख़ाक होने वालों को (मरने के बा'द) चैन की नींद नसीब होती है क्यूं कि रूह़ व जान के लिये **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत इक्सीर या'नी निहायत मुअस्सिर और मुफ़ीद दवा का द-रजा रखती है।

दुर्रा पड़ते ही ज़लज़ला जाता रहा

एक मर्तबा **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में **ज़लज़ला** आ गया और ज़मीन ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी। येह देख कर करामत व अ़दालत की आ'ला मिसाल, साह़िबे अ़-ज़-मतो जलाल, **अमीरुल मुअमिनीन**, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जलाल में आ गए और ज़मीन पर एक दुर्रा मार कर फ़रमाने लगे : **قِرِّیْ اَلَمْ اَعْدِلْ عَلَیْکِ** (या'नी ऐ ज़मीन ! ठहर जा क्या मैं ने तेरे ऊपर अ़द्लो इन्साफ़ नहीं किया ?) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का फ़रमाने जलालत निशान सुनते ही **ज़मीन साकिन हो गई** (या'नी ठहर गई) **और ज़लज़ला ख़त्म हो गया।** (طبقات الشّافعية الكبرى للسبكى ج٢ص٣٢٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों को कितनी त़ाक़त और क़ुव्वत ह़ासिल होती है और वोह किस क़दर बुलन्दो बाला शान के ह़ामिल होते हैं। सच है कि जो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हो जाते हैं **ख़ुदाई** (या'नी दुन्या) **उन की हो जाती है।**

"उ़मर फ़ारूक़" के 8 हुरूफ़ की निस्बत से 8 फ़ज़ाइले ह़ज़रते उ़मर ब ज़बाने मह़बूबे रब्बे अक्बर

مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلٰى رَجُلٍ خَيْرٍ مِّنْ عُمَرَ ﴿1﴾ या'नी ह़ज़रते उ़मर

(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से बेहतर किसी **आदमी पर सूरज तुलूअ़ नहीं हुवा ।**

(تِرمِذی ج٥ ص٣٨٤ حدیث٣٧٠٤)

तरजुमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

﴿2﴾ आस्मान के तमाम फ़िरिश्ते ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की इ़ज़्ज़त करते हैं और ज़मीन का हर शैत़ान इन के ख़ौफ़ से लरज़ता है[1] ﴿3﴾ **لَا یُحِبُّ اَبَا بَکْرٍ وَّ عُمَرَ مُنَافِقٌ وَّ لَا یُبْغِضُھُمَا مُؤْمِنٌ** या'नी (ह़ज़रते) अबू बक्र और (ह़ज़रते) उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से मोमिन **महब्बत** रखता है और मुनाफ़िक़ इन से बुग़्ज़ रखता है[2] ﴿4﴾ **عُمَرُ سِرَاجُ اَھْلِ الْجَنَّۃِ** या'नी (ह़ज़रते) **उ़मर (** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **) अहले जन्नत के चराग़ हैं ।**[3] ﴿5﴾ **ھٰذَا رَجُلٌ لَّا یُحِبُّ الْبَاطِلَ** या'नी येह (ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) वोह शख़्स है जो बात़िल को पसन्द नहीं करता[4] ﴿6﴾ ''तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा ।'' तो ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तशरीफ़ लाए[5] ﴿7﴾ **رِضَا اللّٰہِ رِضَا عُمَرَ وَرِضَا عُمَرَ رِضَا اللّٰہِ** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की रिज़ा है और ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की रिज़ा **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा है[6] ﴿8﴾ **اِنَّ اللّٰہَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِہٖ** या'नी ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ज़बान और दिल पर ह़क़ जारी फ़रमाया ।''[7]

---

(1) تاریخ دمشق ج ٤٤ ص ٨٥ (2) ایضاً ص٢٢٥ (3) مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٩ ص ٧٧ حدیث ١٤٤٦١
(4) مُسنَدِ اِمام احمد ج٥ ص٣٠٢ حدیث١٥٥٨٥ (5) تِرمِذی ج٥ ص٣٨٨ حدیث ٣٧١٤ (6) جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج٤ ص٣٦٨ حدیث ١٢٥٥٦ (7) تِرمِذی ج٥ ص٣٨٣ حدیث ٣٧٠٢

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक (नम्बर 8) के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी इन के दिल में जो ख़यालात आते हैं वोह ह़क़ होते हैं और ज़बान से जो बोलते हैं वोह ह़क़ बोलते हैं। (मिरआत, जि. 8, स. 366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमें ह़ज़रते उ़मर से प्यार है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को आ़लीशान मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया और बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़तो शराफ़त और फ़ज़ीलतो करामत से नवाज़ा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शाने रिफ़्अ़त निशान को तस्लीम करना, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बरह़क़ जान कर राहे हिदायत का रोशन मीनार समझना और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से **मह़ब्बत** व अ़क़ीदत रखना निहायत ज़रूरी है जैसा कि जलीलुल क़द्र सह़ाबी **ह़ज़रते सय्यिदुना** अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि मह़बूबे रब्बे दो जहान, शाहे कौनो मकान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तवज्जोह निशान है : **مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ** या'नी जिस शख़्स ने **ह़ज़रते उ़मर** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और **जिस ने ह़ज़रते उ़मर** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) **से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की।** **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ص۱۰۲حدیث ٦٧٢٦)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे, आस्माने हिदायत के चमकते दमकते

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

सितारे, दुखी दिल के सहारे, गुलामाने मुस्त़फ़ा की आंखों के तारे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शान और उन से मह़ब्बत करने का इन्आ़म आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मह़ब्बत करना गोया रसूले पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करना है और مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बुग़्ज़ो अ़दावत ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ो अ़दावत के मु-तरादिफ़ है, जिस का नतीजा दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत व जुलालत है ।

वोह उ़मर वोह ह़बीबे शहे बह़रो बर वोह उ़मर ख़ासए हाशिमी ताजवर
वोह उ़मर खुल गए जिस पे रह़मत के दर वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

जिस से मह़ब्बत, उसी के साथ ह़श्र

"बुख़ारी शरीफ़" की ह़दीसे पाक में है : ख़ादिमे बारगाहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूले रह़मत, शफ़ीए़ रोज़े क़ियामत, मुख़्बिरे अह़वाले दुन्या व आख़िरत से पूछा कि क़ियामत कब आएगी ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने इस के लिये क्या तय्यारी की है ? अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** मेरे पास तो कोई अ़मल नहीं, सिवाए इस के कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **मह़ब्बत** करता हूं। सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

मह़बूबे रब्बुल अर्दे़ वस्समावात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ.** तुम उसी के साथ होगे जिस से **मह़ब्बत** करते हो । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हमें किसी ख़बर ने इतना ख़ुश नहीं किया जितना सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने मह़ब्बत निशान ने किया कि तुम उसी के साथ होगे जिस से **मह़ब्बत** करते हो । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم से **मह़ब्बत** करता हूं और ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से भी, लिहाज़ा उम्मीद वार हूं कि इन की **मह़ब्बत** के बाइ़स इन ह़ज़रात के साथ होउंगा अगर्चे मेरे आ'माल इन जैसे नहीं ।

(بُخاری ج ۲ ص۵۲۷ حدیث۳۶۸۸)

हम को शाहे बह़रो बर से प्यार है *اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है*

और अबू बक्रो उ़मर से प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है

अ़-ज़़-मते सह़ाबा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 192 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सवानेहे़ करबला''** सफ़ह़ा 31 पर ह़दीसे पाक मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो !! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ,

जिस ने इन्हें मह़बूब रखा मेरी **मह़ब्बत** की वजह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़ किया उस ने मुझ से बुग़्ज़ किया, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी बेशक उस ने **अल्लाह तआ़ला** को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह तआ़ला** को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह तआ़ला** उसे गिरिफ़्तार करे। **(ترمذی ج٥ ص٤٦٣ حدیث٣٨٨٨)**

हम को अस्ह़ाबे नबी से प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰه अपना बेड़ा पार है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "मुसल्मान को चाहिये कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में उन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत को जगह दे। उन की मह़ब्बत हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है और जो बद नसीब सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अ-दबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल है, मुसल्मान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।" (सवानेह़े करबला, स. 31) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाउ है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

इस शे'र का मत़लब है कि अहले सुन्नत का बेड़ा (या'नी कश्ती) पार है क्यूं कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की त़रह़ हैं।

मुर्दा चीख़ने लगा, साथी भाग खड़े हुए

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **413** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा **246** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़लफ़ बिन तमीम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيْم फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़ुसैब बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر का बयान है कि मैं तिजारत किया करता था और **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّ وَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से काफ़ी मालदार था। मुझे हर त़रह़ की आसाइशें मुयस्सर थीं और मैं अक्सर "**ईरान**" के शहरों में रहा करता था। **एक मर्तबा** मुझे मेरे मज़दूर ने बताया कि फ़ुलां मुसाफ़िर ख़ाने में एक लाश बे गोरो कफ़न पड़ी है, कोई दफ़्नाने वाला नहीं। येह सुन कर मुझे उस मरने वाले की बे कसी पर तर्स आया और **ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से तज्हीज़ो तक्फ़ीन** का इन्तिज़ाम करने के लिये मैं मुसाफ़िर ख़ाने पहुंचा तो देखा कि एक लाश पड़ी है जिस के पेट पर कच्ची ईंटें रखी हैं। मैं ने एक चादर उस पर डाल दी, उस लाश के क़रीब उस के साथी भी बैठे थे। उन्हों ने मुझे बताया कि येह शख़्स बहुत इ़बादत गुज़ार और निकूकार था, हमारे पास इतनी रक़म नहीं कि हम इस की **तज्हीज़ो तक्फ़ीन** का इन्तिज़ाम कर सकें। येह सुन कर मैं ने उजरत पर एक शख़्स को कफ़न लेने और दूसरे को **क़ब्र** खोदने के लिये भेजा और हम लोग मिल कर उस की **क़ब्र** के लिये कच्ची ईंटें तय्यार करने और उसे ग़ुस्ल देने के लिये पानी गर्म करने लगे। **अभी हम इन्हीं कामों में मश्ग़ूल थे कि यकायक वोह मुर्दा उठ बैठा, ईंटें उस के पेट से गिर गईं फिर**

वोह बड़ी भयानक आवाज़ में चीख़ने लगा : हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! उस के साथी येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर वहां से भाग खड़े हुए । लेकिन मैं हिम्मत कर के उस के क़रीब गया और बाज़ू पकड़ कर उसे हिलाया और पूछा : तू कौन है और तेरा क्या मुआ़-मला है ? **वोह** कहने लगा : ''मैं कूफ़े का रिहाइशी था और बद क़िस्मती से मुझे ऐसे बुरे लोगों की सोह़बत मिली जो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को गालियां दिया करते थे । مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उन की बुरी सोह़बत की वजह से मैं भी उन के साथ मिल कर **शैख़ैने करीमैन** या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को गालियां देता और उन से नफ़रत करता था ।'' **ह़ज़रते सय्यिदुना** अबुल हुसैब बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : येह सुन कर मैं ने तौबा व इस्तिग़फ़ार की और उसे कहा : ऐ बद बख़्त ! फिर तो तू वाक़ेई सख़्त सज़ा का मुस्तह़िक़ है लेकिन येह तो बता कि तू मरने के बा'द ज़िन्दा कैसे हो गया ? तो वोह कहने लगा : मेरे नेक आ'माल ने मुझे कोई फ़ाएदा न दिया । **सह़ाबए किराम** رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن **की गुस्ताख़ी की वजह से मुझे मरने के बा'द घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया गया** और वहां मुझे मेरा ठिकाना दिखाया गया और कहा गया : ''अब तुझे दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ताकि तू अपने बद अ़क़ीदा साथियों को अपने दर्दनाक अन्जाम की ख़बर दे और उन्हें बताए कि **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से दुश्मनी रखने वाला आख़िरत में किस क़दर दर्दनाक अ़ज़ाब का

मुस्तह़िक़ है। जब तू उन को अपने बारे में बता चुकेगा तो तुझे दोबारा तेरे अस्ली ठिकाने (या'नी जहन्नम) में डाल दिया जाएगा।" बस! येह ख़बर देने के लिये मुझे दोबारा ज़िन्दा किया गया है ताकि मेरी इस इ़ब्रत नाक ह़ालत से गुस्ताख़ाने सह़ाबा इ़ब्रत ह़ासिल करें और अपनी गुस्ताख़ियों से बाज़ आ जाएं वरना जो इन ह़ज़राते क़ुदसिय्या عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ़-ज़मत निशान में गुस्ताख़ी करेगा उस का अन्जाम भी मेरी त़रह़ होगा। **इतना** कहने के बा'द वोह शख़्स दोबारा **मुर्दा** ह़ालत में हो गया। इतनी देर में क़ब्र खोदी जा चुकी थी और कफ़न का इन्तिज़ाम भी हो चुका था लेकिन मैं ने कहा : मैं ऐसे बद बख़्त की **तज्हीज़ो तक्फ़ीन** हरगिज़ नहीं करूंगा जो **शैख़ैने करीमैन** (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ हो और मैं तो इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता। येह कह कर मैं वहां से वापस से चल दिया। बा'द में मुझे किसी ने ख़बर दी कि उस के बद अ़क़ीदा साथियों ने ही उस को ग़ुस्ल दिया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उन के इ़लावा किसी ने भी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत न की। ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़लफ़ बिन तमीम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَظِيْم फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़ुसैब बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر से पूछा : क्या आप इस वाक़िए़ के वक़्त वहां मौजूद थे? उन्हों ने जवाब दिया : जी हां! मैं ने अपनी आंखों से उस बद बख़्त को दोबारा ज़िन्दा होते देखा और अपने कानों से उस की बातें सुनीं। येह वाक़िआ़ सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़लफ़ बिन तमीम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَظِيْم ने फ़रमाया : अब मैं गुस्ताख़ाने सह़ाबा के इस इ़ब्रत नाक अन्जाम की ख़बर लोगों को ज़रूर दूंगा ताकि वोह इ़ब्रत पकड़ें और अपनी आ़क़िबत की फ़िक्र करें। (عیون الحکایات (عربی) ص۱۵۲)

रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ हमें सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ़-ज़मत निशान में गुस्ताख़ी व बे अ-दबी से मह़फ़ूज़ रखे और तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सच्ची **मह़ब्बत** और उन की ख़ूब ख़ूब ता'ज़ीम करने की सआ़दत इनायत फ़रमाए। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ हम सब को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखे, हमें बे अ-दबों और गुस्ताख़ों से हमेशा मह़फ़ूज़ो मामून रखे और हम से कभी अदना सी गुस्ताख़ी भी सरज़द न हो।

मह़फ़ूज़ सदा रखना ख़ुदा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! गुस्ताख़ों का अन्जाम बड़ा दर्दनाक व इ़ब्रत नाक होता है। ऐसे ना मुराद ज़माने भर के लिये इ़ब्रत का सामान बन जाते हैं। जो **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की पाक बारगाहों में ना ज़ैबा कलिमात कहते या सह़ाबए किराम व औलिया उ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक शानों में मुज़ख़्रफ़ात (या'नी गालियां) बकते हैं आख़िरत में तो तबाही व बरबादी उन का मुक़द्दर ज़रूर बनेगी मगर वोह दुन्या में भी ज़लीलो रुस्वा हो कर ज़माने भर के लिये निशाने इ़ब्रत बन जाते हैं और ह़क़ीक़ी मुसल्मान कभी भी उन के अ़क़ाइदो आ'माल की पैरवी नहीं करते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हमेशा बा अदब रहने और बा अदब लोगों या'नी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए और बे अ-दबों और गुस्ताख़ों की सोह़बत

से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

از خدا جُوئیم توفیقِ ادب بے ادب محروم گشت از فضلِ رب

(या'नी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़े अदब त़लब करो, बे अदब फ़ज़्ले रब से महरूम फिरता है)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म के मु-तअ़ल्लिक़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मु-तअ़ल्लिक़ **अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा** जानना ज़रूरी है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 241 पर है : ''बा'दे अम्बिया व मुर-सलीन (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام), तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (या'नी फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, जो शख़्स मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को सिद्दीक़ या फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अफ़्ज़ल बताए गुमराह, बद मज़्हब है।'' (बहारे शरीअ़त)

सह़ाबा में है अफ़्ज़ल ह़ज़रते सिद्दीक़ का रुत्बा
है उन के बा'द आ'ला मर्तबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** सफ़ह़ा 974 पर **अल्लाहुल मजीद** عَزَّوَجَلَّ **सू-रतुल ह़दीद** पारह **27**, आयत नम्बर **29** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿۲۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि फ़ज़्ल **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हाथ है, देता है जिसे चाहे और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बड़े फ़ज़्ल वाला है।

बद मज़्हबिय्यत से नफ़रत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा 302 पर है : **ह़ज़रते** उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ नमाज़े मग़रिब पढ़ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाए थे कि एक शख़्स ने आवाज़ दी : कौन है कि मुसाफ़िर को खाना दे ? **अमीरुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) ने ख़ादिम से इर्शाद फ़रमाया : इसे हमराह ले आओ। वोह आया (तो) उसे खाना मंगा कर दिया। मुसाफ़िर ने खाना शुरूअ़ ही किया था कि एक लफ़्ज़ उस की ज़बान से ऐसा निकला जिस से "बद मज़्हबी की बू" आती थी, फ़ौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया।

(کَنْزُ الْعُمّال ج۱۰ ص ۱۱۷ رقم ۲۹۳۸۴)

फ़ारिके़ ह़क़्क़ो बात़िल इमामुल हुदा
तैगे़ मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के इस शे'र का मत़लब है : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़ करने वाले, हिदायत के इमाम और इस्लाम की ह़िमायत में सख़्ती से बुलन्द की हुई तलवार की त़रह़ हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ पर लाखों सलाम हों।

बद मज़्हबों के पास बैठना ह़राम है

''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**'' सफ़ह़ा **277** पर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से बद मज़्हबों के पास बैठने का ह़ुक्म पूछा गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''(बद मज़्हबों के पास बैठना) ह़राम है और बद मज़ह़ब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिये ज़ह़रे क़ातिल ।'' **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَايُضِلُّوْنَكُمْ وَلَايَفْتِنُوْنَكُمْ या'नी उन्हें अपने से दूर करो और उन से दूर भागो वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डालें । **(مقدمہ صحیح مُسلِم حدیث۷ ص ۹)** और अपने नफ़्स पर ए'तिमाद करने वाला (आदमी) बड़े कज़्ज़ाब (या'नी बहुत ही बड़े झूटे) पर ए'तिमाद करता है, اِنَّهَا اَكْذَبُ شَيْءٍ اِذَا حَلَفَتْ فَكَيْفَ اِذَا وَعَدَت (नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बढ़ कर झूटा है न कि जब ख़ाली वा'दा करे) सह़ीह़ ह़दीस में फ़रमाया : जब दज्जाल निकलेगा, कुछ (अफ़राद) उसे तमाशे के तौ़र पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तक़ीम (या'नी क़ाइम) हैं, हमें इस से क्या नुक़्सान होगा ? वहां (या'नी दज्जाल के पास) जा कर वैसे ही हो जाएंगे । **(ابوداؤدج٤ ص١٥٧حدیث ٤٣١٩)** ह़दीस में है, नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उस का ह़श्र उसी के साथ होगा । **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٥ص١٩حدیث ٦٤٥٠)**

आक़ा ने अपने मुश्ताक़ को सीने से लगा लिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पाने, दिल में सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़ाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की मह़ब्बत जगाने, नेक सोह़बतों से फ़ैज़ उठाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र इख़्तियार कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और अपनी आख़िरत संवारने के लिये रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह के इब्तिदाई **10** दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कीजिये और **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ **म-दनी चेनल** के सिल्सिले देखते रहिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मुक़र्रबीन** व **सालिह़ीन** की मह़ब्बत को दिन ब दिन बढ़ता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का फ़ैज़ान और इन की नज़रे शफ़्क़त शामिले ह़ाल होगी । तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे **सना ख़्वाने** रसूले मक़्बूल, बुलबुले रौज़ए रसूल, मद्दाह़े सह़ाबा व आले बतूल, गुलज़ारे **अ़त्तार** के मुश्कबार फूल, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी अलह़ाज अबू उ़बैद क़ारी ह़ाजी **मुश्ताक़ अह़मद अ़त्तारी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की वफ़ात से चन्द माह क़ब्ल मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को) किसी इस्लामी भाई ने एक मक्तूब इरसाल किया था, उस में उन्हों ने ब क़सम अपना वाक़िआ़ कुछ यूं तह़रीर किया था : मैं ने ख़्वाब में अपने आप को **सुनह़री जालियों के रू-बरू पाया**, जाली मुबारक में बने हुए

तीन[3] सूराख़ में से एक सूराख़ में जब झांका तो एक दिलरुबा मन्ज़र नज़र आया, क्या देखता हूं कि **सरकारे मदीना**, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं और साथ ही शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا भी ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं । इतने में **ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی **बारगाहे मह़बूबे बारी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी को सीने से लगा लिया और फिर कुछ इर्शाद फ़रमाया मगर वोह मुझे याद नहीं फिर आंख खुल गई ।

आप के क़दमों से लग कर मौत की या मुस्तफ़ा
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उ़मर की मौत पर इस्लाम रोएगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने कहा है कि इस्लाम उ़मर की मौत पर रोएगा । **(حلیۃ الاولیاء ج۲ ص۱۷۵)**

म-रज़ुल विसाल में भी नेकी की दा'वत

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर जब क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो एक नौ जवान तसल्ली देने के लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और कहा : ऐ **अमीरुल मुअमिनीन ! अल्लाह** की त़रफ़ से आप को बिशारत हो क्यूं

कि आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत और इस्लाम में सबक़त नसीब हुई, जैसा कि आप को मा'लूम है और जब ख़लीफ़ा बनाए गए तो अ़द्लो इन्साफ़ किया फिर आप शहीद होने वाले हैं । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि येह उमूर मेरे लिये बराबर बराबर हो जाएं, न मुझ पर किसी का ह़क़ निकले न मेरा किसी पर ।" जब वोह शख़्स जाने लगा तो उस की चादर ज़मीन को छू रही थी, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : उस को मेरे पास लाओ । जब वोह आ गया तो फ़रमाया : ऐ भतीजे ! अपने कपड़े को ऊपर कर ले येह तेरे कपड़े को ज़ियादा साफ़ रखेगा और येह **अल्लाह** को भी पसन्द है ।

(بخاری ج۲ ص۵۳۲ حدیث ۳۷۰۰)

शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो अ़र्ज़ की गई : ऐ **अमीरुल मुअमिनीन !** नमाज़ (का वक़्त है) । फ़रमाया : जी हां, सुनिये ! "जो शख़्स नमाज़ ज़ाएअ़ करता है उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं ।" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **शदीद ज़ख़्मी** होने के बा वुजूद **नमाज़** अदा फ़रमाई ।

(کتابُ الکَبائِر ص۲۲)

क़ब्र में बदन सलामत

"बुख़ारी शरीफ़" में है : ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए मुनव्वरह की दीवार गिरी तो लोग उस को बनाने लगे,

(बुन्याद खोदते वक़्त) **एक पाउं ज़ाहिर हुवा** तो सब लोग घबरा गए और लोगों ने गुमान येह किया कि येह **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़दम मुबारक है और कोई ऐसा शख़्स न मिला जो उसे पहचान सकता तो ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने कहा : **لَا، وَاللّٰهِ! مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ** صَلَّى اللّٰه عليه وسلَّم، **مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عُمَرَ** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ. या'नी ख़ुदा की क़सम ! येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़दम शरीफ़ नहीं है बल्कि येह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़दम मुबारक है।

(بُخاری شریف ج۱ ص۴۶۹ حدیث ۱۳۹۰)

जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता
ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। **(اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)**

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"करम या रसूलल्लाह" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से पानी पीने के 13 म-दनी फूल

❁ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मर्तबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰه पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा करो صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿2﴾ (ترمذی ج۳ ص۳۵۲ حدیث ۱۸۹۲) नबिय्ये अकरम ने बरतन में सांस लेने या उस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है। (ابوداؤد ج۳ص ٤٧٤ حدیث۳۷۲۸) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो, (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से ठन्डा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे ठन्डी हो जाए फिर पियो। (मिरआत, जि. 6, स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं। ❁ पीने से पहले بِسْمِ اللّٰه पढ़ लीजिये ❁ चूस कर छोटे छोटे घूंट पियें, बड़े बड़े घूंट पीने से **जिगर (LEAVER) की बीमारी** पैदा होती है ❁ पानी तीन सांस में पियें ❁ बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❁ लोटे वग़ैरा से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी पीना 70 मरज़ से शिफ़ा है कि येह आबे ज़मज़म शरीफ़ की मुशा-बहत रखता है, इन दो (या'नी वुज़ू का बचा हुवा पानी और ज़मज़म शरीफ़) के इ़लावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना मक्रूह है। (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 575, जि. 21, स. 669) येह दोनों पानी क़िब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें

❁ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़्सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है (اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج ٥ ص ٥٩٤) ❁ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये ❁ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर पीना शुरूअ़ करे पहली सांस के आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूसरे के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن और तीसरे सांस के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े (اِحياءُ الْعُلُوم ج ٢ ص ٨) ❁ **गिलास** में बचे हुए मुसल्मान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फेंकना न चाहिये ❁ मन्कूल है : سُؤْرُ الْمُؤْمِنِ شِفَاءٌ या'नी मुसल्मान के झूटे में शिफ़ा है (الفتاوى الفقهية الكبرى لابن حجر الهيتمى ج ٤ ص ١١٧، كشف الخفاء ج ١ ص ٣٨٤)

❁ पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बा'द ख़ाली गिलास को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

एक चुप सो सुख

100

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का तालिब

20 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1435 सि.हि.

06-11-2012

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(19 शव्वालुल मुकर्रम 1433 सि.हि. ब मुताबिक़ 6-09-2012)

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का
ख़ुदा उन का मुहम्मद मुस्तफ़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रह़मत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूक़े आ'ज़म का

पसे सिद्दीक़े अक्बर मुस्तफ़ा के सब सह़ाबा में
है बेशक सब से ऊंचा मर्तबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

गली से उन की शैतां दुम दबा कर भाग जाता है
है ऐसा रो'ब ऐसा दब-दबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है
ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

रहे तेरी अ़ता से या ख़ुदा ! तेरी इनायत से
हमारे हाथ में दामन सदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोह सीधे रस्ते से
करम जिस बख़्त वर पर हो गया फ़ारूक़े आ'ज़म का

ख़ुदा की ख़ास रह़मत से मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायत से
जहन्नम में न जाएगा गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सदा आंसू बहाए जो ग़मे इश्क़े मुह़म्मद में
दे ऐसी आंख या रब ! वासिता फ़ारूक़े आ'ज़म का

मुझे ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत अब इनायत हो
वसीला पेश करता हूं ख़ुदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें पियासी हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासिता फ़ारूक़े आ'ज़म का

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासिता फ़ारूक़े आ'ज़म का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	जहन्नम को ब कसरत याद करो	23
सदाए फ़ारूक़ी और मुसल्मानों की फ़त्ह़ याबी	2	लोगों की इजाज़त से बैतुल माल से शह्द लेना	24
सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म का तआ़रुफ़	5	मुसल्सल रोज़े रखते	24
क़ुर्बे ख़ास	7	सात या नव लुक़्मे	24
साह़िबे करामात	7	ऊंटों के बदन पर तेल मल रहे थे	24
करामत ह़क़ है	8	फ़ारूक़े आ'ज़म का जन्नती मह़ल	25
करामत की ता'रीफ़	8	दुर्रा पड़ते ही ज़लज़ला जाता रहा	26
अफ़्ज़लुल औलिया	9	8 फ़ज़ाइले ह़ज़रते उ़मर ब ज़बाने मह़बूबे रब्बे अक्बर	26
दरियाए नील के नाम ख़त़	10	हमें ह़ज़रते उ़मर से प्यार है	28
ना जाइज़ रस्मो रवाज और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	12	जिस से मह़ब्बत, उसी के साथ ह़श्र	29
3 बीमारियां	14	अ़-ज़-मते सह़ाबा	30
मज़्कूरा बीमारियों का इलाज	15	मुर्दा चीख़ने लगा, साथी भाग खड़े हुए	32
क़ब्र वाले से गुफ़्त-गू	17	फ़ारूक़े आ'ज़म के मु-तअ़ल्लिक़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत	36
सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब	18	बद मज़्हबिय्यत से नफ़रत	37
अचानक दो शेर आ पहुंचे	19	बद मज़्हबों के पास बैठना ह़राम है	38
घर वालों को तहज्जुद के लिये जगाते	20	आक़ा ने अपने मुश्ताक़ को सीने से लगा लिया	38
मह़बूबे फ़ारूक़े आ'ज़म	21	उ़मर की मौत पर इस्लाम रोएगा	40
शह्द का पियाला	21	म-रज़ुल विसाल में भी नेकी की दा'वत	40
फ़ानी दुन्या का नुक़्सान बरदाश्त कर लिया करो	21	शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़	41
फ़ारूक़े आ'ज़म का रोना	22	क़ब्र में बदन सलामत	41
ख़ुद को अ़ज़ाब से डराने का अनोखा त़रीक़ा	23	पानी पीने के 13 म-दनी फूल	43
बकरी का बच्चा भी मर गया तो.....	23	ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का	45

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

آخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآنِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الطبقات الکبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	مناقب عمر بن الخطاب	دار ابن خلدون
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	تاریخ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	الرّیاض النضرۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	حجۃ اللہ علی العالمین	مرکز اہلسنت برکاتِ رضا ہند
مؤطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت	الزھد للامام احمد	دار الغد الجدید مصر
مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الزھد لابن المبارک	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	اتحاف السّادۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کتاب الکبائر	پشاور
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	العظمۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت	عیون الحکایات	دار الکتب العلمیۃ بیروت
کنز العمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الفتاوی الفقہیۃ الکبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
کشف الخفاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مراۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کرامات صحابہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहौल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजितमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इबितदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, ब्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net